Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-214-218

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 214-218
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. मुन्ना साह
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
मिल्लत महाविद्यालय, दरभंगा, बिहार.

Corresponding Author :

डॉ. मुन्ना साह
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
मिल्लत महाविद्यालय, दरभंगा, बिहार.

भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी का वैश्विक स्वरुप

शोध सार - वर्तमान समय में मानव जाति का एक-दूसरे से संपर्क स्थापित करना अत्यंत सरल एवं सुगम हो गया है, जिसका मुख्य कारण तकनीक का तीव्र विकास है। आज के दौर में सभी भाषा-भाषी व्यक्ति अपने मनपसंद देशों में आसानी से भ्रमण कर सकते हैं तथा वहाँ की भाषा को विभिन्न 'ऐप' के माध्यम से समझ सकते हैं। टेलीकॉम क्रांति, इंटरनेट और सोशल मीडिया के सार्वभौमिक विस्तार ने भाषाई दूरी को लगभग समाप्त कर दिया है। अब हिन्दी मात्र भारत की भाषा नहीं रह गई है, बल्कि उसने एक वैश्विक भाषा के रूप में अपनी पहचान बना ली है। हिन्दी भाषा विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में डिप्लोमा एवं डिग्री पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाई जा रही है। विकसित देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी एक आधुनिक भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है। वहाँ की अनेक कंपनियाँ भारत में अपने उद्योग-धंधों के विस्तार के लिए अपने कर्मियों को हिन्दी भाषा का प्रशिक्षण देती हैं। भारत के पड़ोसी देशों में हिन्दी सबसे अधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषाओं में से एक है। नेपाल, म्यांमार, थाईलैंड, इंडोनेशिया, श्रीलंका आदि देशों में हिन्दी भाषा तथा भारतीय संस्कृति का व्यापक प्रसार हुआ है। अमेरिका, कनाडा, ब्रटेन और जर्मनी जैसे देशों में विश्वविद्यालयों के साथ-साथ इंडियन कम्युनिटी स्कूलों में भी हिन्दी की शिक्षा दी जाती है। फ़ीजी, मॉरिशस, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद और टोबैगो जैसे देशों में हिन्दी सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं संवाद के स्तर पर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बीज-शब्द - वैश्विकरण, साहित्य, संस्कृति, सम्पर्क भाषा, अनुवाद, प्रवासी, परिदृश्य।

मूल आलेख - पूरे विश्व से जुड़ा हुआ, स्वीकार्य एवं प्रभावी रूप वैश्विक स्वरूप कहलाता है। "अंग्रेजी के 'ग्लोबलाइजेशन' शब्द के लिए हिन्दी में भूमंडलीकरण शब्द प्रचलित है। इसके लिए 'वैश्विकरण' शब्द भी प्रयुक्त होता है। यह शब्द बीसवीं सदी के अंतिम दशक में व्यापक रूप में प्रयोग में आया।"[1] भूमंडलीकरण ने विश्व को एक साझा मंच प्रदान किया है, जहाँ

आर्थिक, सांस्कृतिक और भाषायी आदान-प्रदान तीव्र हुआ है। इस दौर में हिन्दी वैश्विक सम्पर्क भाषा के रूप में उभर रही है।

हिन्दी भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ उत्तर भारत में संवाद की प्रमुख भाषा है। भारत में विभिन्न भाषाओं और बोलियों की बहुलता के बावजूद हिन्दी एक ऐसी भाषा है, जिसमें संपूर्ण भारत को जोड़ने की शक्ति निहित है। वैश्विक परिदृश्य में देखें तो हिन्दी का विस्तार भारत के पड़ोसी देशों- नेपाल, पाकिस्तान, भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका और मालदीव आदि में व्यापक रूप से हुआ है। इन देशों में हिन्दी बोलने, लिखने-पढ़ने के साथ-साथ अध्ययन और अध्यापन की भाषा के रूप में भी प्रचलित है। इंडोनेशिया, मलेशिया, थाईलैंड, चीन, मंगोलिया, कोरिया जैसे देशों में भारतीय संस्कृति का स्वरूप स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। जिन देशों में हिन्दी को एक आधुनिक भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है, उनमें अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा आदि प्रमुख हैं।

डॉ. कमल किशोर गोयनका ने मॉरीशस के प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत की तुलना प्रेमचंद से की है तथा उनके संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि- "प्रेमचंद और अभिमन्यु में यही समानता है कि दोनों ही धरती के लेखक हैं तथा वे अपने देश की जन-पीड़ा और जन-मुक्ति के लेखक हैं। इस कारण वे मॉरीशस के प्रेमचंद हैं।"[2] अभिमन्यु अनत का प्रसिद्ध उपन्यास 'लाल पसीना' वर्ष 1977 में प्रकाशित हुआ तथा उनका दूसरा उपन्यास 'गांधी जी बोले थे' 1984 में प्रकाशित हुआ। अभिमन्यु अनत हिन्दी के ऐसे विशिष्ट लेखक थे जिन्होंने प्रवासी भारतीय के रूप में सर्वाधिक साहित्य की रचना की और जो भारत तथा मॉरीशस की आत्मा को जोड़ने वाले एक सशक्त साहित्यिक सेतु सिद्ध हुए।

सूरीनाम में बसे प्रवासी भारतीय चाहते हैं कि भारत की संस्कृति वहाँ अक्षुण्ण बनी रहे। कवयित्री संध्या भग्गू ने अपनी कविता में सूरीनाम को 'छोटा भारत' कहा है -

"भारत से,
सूरीनाम में आये।
पुष्प पूर्ण से,
सारा देश सजाये
सुनकर देखकर भारतवासी
गदगद हो जाएँ
यूं तो ये हैं हमारे लोग
जो धोखे से आये
सरनामी बनकर
सूरीनाम देश को
छोटा भारत बनाएँ"[3]

इसी प्रकार फ़ीजी के प्रतिष्ठित कवि 'काशी राम कुमुद' अपनी एक कविता 'हिन्दी बिरवा' में लिखते हैं कि -

"कभी बैठ इस रम्य विजन में,
हम गायक बन जाते हैं।
अपनी कल्पना वेदी पर,
स्वप्निल धूनी रमाते हैं।
उन्मादित हो बीच बीच में, हिन्दी का अलख जगाते हैं।
हम रक्त बिन्दुओं से सींच सींच, हिन्दी बिरवा पनपाते हैं।"[4]

'त्रिनिदाद' के अधिकतर सामुहिक आयोजनों में गाया जाने वाला हिन्दी का गीत 'सुहानी रात ढल चुकी, ना जाने तुम कब आओगे' 'त्रिनिदाद' में बहुत लोकप्रिय है। आस्ट्रेलिया के कैनबरा शहर में हिन्दी गद्य और कविता लिखने

की प्रथा भी सशक्त है। 'रेखा राजवंशी' आस्ट्रेलिया की प्रसिद्ध हिन्दी रचनाकार हैं। इंडोनेशिया की भाषा 'इंडोनेशियन' की शब्दावली में हिन्दी और संस्कृत के कई शब्द शामिल हैं। जैसे - 'राजा', 'महाराजा', 'तत्काल', 'शीघ्र' (शिघ्र), 'कार्य' (काम) आदि। इंडोनेशिया में भारतीय व्यापार के विस्तार के कारण हिन्दी भाषा के औपचारिक और अनौपचारिक पाठ्यक्रम पढ़ाए जा रहे हैं, जो व्यापार, व्यवसाय और शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं। हिन्दी भाषा के प्रति इंडोनेशियाई बच्चों में रुझान बढ़ा है इसीलिए हिन्दी भाषा सीखने के लिए बहुत सारे इंडोनेशियाई बच्चे भारत भी आते हैं।

'उज्बेकिस्तान में स्थित 'ताशकंद राष्ट्रीय विश्वविद्यालय' की पूर्वी संकाय में भारतीय भाषा विज्ञान विभाग था, जिसे 1994 में बदलकर "दक्षिण एशियाई भाषाओं का विभाग' कर दिया गया और सितंबर 2019 में इस की गतिविधियाँ विस्तारित होकर 'दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशियाई भाषाओं का विभाग' बना। वर्तमान में अंतरराष्ट्रीय पत्रकारिता और अनुवाद के विभागों में हिन्दी भाषा पढ़ाई जाती है।"[5] न्यूज़ीलैण्ड की लेखिका और समाज सेवी सुनीता नारायण ने फ़ीजी हिन्दी, हिन्दी तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं से अपने व्यक्तित्व के विकास की बात की है तथा उन्होंने अपने कविता में लिखा है कि -

"ऐसी इनकी दोस्ती
हिन्दी मेरी नानी माँ
फ़ीजी हिन्दी मेरी माँ
ऐसी इनकी दोस्ती
फ़ीजी हिन्दी सीखा घर के आंगन में
हिन्दी सीखा गरुकुल के आंगन में
ऐसी इनकी दोस्ती
घर में बोली माँ की हिन्दी
बाहर बोली नानी की हिन्दी
ऐसी इनकी दोस्ती
एक ने सोचना - बोलना सिखाया
एक ने मुझे लिखना - पढ़ना
ऐसी इनकी दोस्ती"[6]

जापान के तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज तथा ओसाका विश्वविद्यालय में हिन्दी के अलावा दर्जनों भाषाओं के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों और समाजों के अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। "जापान में अनेक अन्य विश्वविद्यालयों में द्वितीय विदेशी भाषा के रूप में अलग-अलग अवधि व स्तर वाले हिन्दी-कोर्स चलते हैं। उदाहरण के लिए तोकुशोकु विश्वविद्यालय (तोक्यो), दाइतो बुंका विश्वविद्यालय (तोक्यो/साइतामा), वासेदा होशिएन, वासेदा यूनिवर्सिटी (तोक्यो), मियागो गाकुइन महिला विश्वविद्यालय (सेंदाई, मियागी) जैसे निजी विश्वविद्यालयों के नाम लिया जा सकता है।"[7] जापान में हिन्दी के विस्तार में प्रोफेसर ताकाहाशि आकिरा, हरजेन्द्र चौधरी, प्रोफेसर ताकेशि फूजी, प्रोफेसर योशिफूमि मिजुनो तथा डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण का योगदान महत्त्वपूर्ण है।

डेनमार्क में दो विश्वविद्यालयों- 'आरहुस यूनिवर्सिटी' एवं 'कोपनहेगन यूनिवर्सिटी' में तथा स्वीडन की 'उप्साला यूनिवर्सिटी' में और नार्वे की 'ओस्लो यूनिवर्सिटी' में हिन्दी शिक्षण जारी है। "विक्रम संवत् 1881 से पूर्व वर्तमान नेपाल के तराई (मधेश) क्षेत्र स्वायत राज्य के रूप में था। नेपाल के इसी प्रदेश में रहने वाले लोगों की मूल भाषा हिन्दी है। नेपाली भाषा भाषी अर्थात् नेपाल के पहाड़ी मूल भाषी तराई मधेश के लोगों को 'मधेशी' या 'मदिसे' नाम से सम्बोधित करते हैं। यह प्रदेश आबादी की दृष्टि से नेपाल का आधा हिस्सा है।"[8] भारत-नेपाल सीमा से आवागमन की वीज़ा-रहित सुविधा होने के कारण बहुतायत संख्या में नेपाल के बच्चे भारतीय विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अध्ययन करते हैं। वे भारतीय साहित्य एंव संस्कृति से अवगत होते ही हैं साथ-साथ हिन्दी भाषा को

आपसी संवाद के लिए सहज रूप में उपयोग करते हैं। नेपाल के हिन्दी रचनाकारों में "केदारमन व्यथित, बी. पी. कोइराला, घुस्वां सायमि, भवानी भिक्षु, बुन्नी लाल सिंह, डॉ. शिवशंकर यादव"[9] आदि के नाम प्रसिद्ध है। नेपाल से प्रकाशित हाने वाली पत्र-पत्रिकाओं में 'नेपाल दैनिक', 'द पब्लिक', 'हिमालिनी', 'जनकपुर बौद्धिक समाज', 'लोकमत साप्ताहिक', प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ हैं जो काठमाण्डू से प्रकाशित होती हैं।

"फ़ीजी में हिन्दी एक आधिकारिक भाषा है। 1937 के संविधान में इसे हिन्दुस्तानी कहा गया लेकिन 2013 के संविधान में इसे केवल हिन्दी कहा गया यह मुख्य रूप से फ़ीजी हिन्दी स्थानीय संस्करण है जो फ़ीजी में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं का मिश्रण है। फ़ीजी में इसे आपसी वार्तालापीय और विभिन्न भाषा-भाषियों के समप्रेक्षण रूप से मान्यता प्राप्त है। फ़ीजी की आबादी का लगभग अस्सी प्रतिशत जनसमुदाय अपने विचार एवं भावनाओं को व्यक्त करने के लिए फ़ीजी हिन्दी का प्रयोग करते हैं।"[10] फ़ीजी के निवासियों में बहुतायत भारतीय मूल के हैं। फ़ीजी में विभिन्न क्षेत्रों से आए भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलने वाले प्रवासी लोगों के कारण वहां की भाषा में अनेक भाषाओं के शब्द मौजूद हैं। इसके बावजूद हिन्दी का विकास वहाँ तेजी से हुआ है। "फ़ीजी में हिन्दी के दो रूप देखने को मिलते हैं पहला मानक हिन्दी - फ़ीजी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त और शिक्षा मंत्रालय द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम मानक हिन्दी में उपलब्ध है। इसका लिखित रूप पूर्णतया देवनागरी लिपि है।...दूसरा रूप है, बोलचाल की भाषा जिसे 'फ़ीजी हिन्दी' के नाम से जाना जाता है। फ़ीजी हिन्दी का अपना एक रूप है, अपना अलग इतिहास है, बोलने समझने में सरल है, अपनी एक मिठास है। यहाँ के गैर-भारतीय भाई-बन्धु इसका प्रयोग बड़ी आसानी कर लेते हैं।"[11] फ़ीजी में तीन विश्वविद्यालय हैं- 'यूनिवर्सिटी ऑफ द साउथ पैसिफिक', 'फ़ीजी नेशनल यूनिवर्सिटी', 'यूनिवर्सिटी ऑफ फ़ीजी' इनमें हिन्दी भाषा में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और डिग्री स्तर पर पठन-पाठन हो रहे हैं। हिन्दी भाषा और साहित्य के विस्तार एवं वैश्विक स्वरूप को विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजनों एवं विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों के द्वारा समझा जा सकता है। पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन (1975 ई.) नागपुर में आयोजित किया गया था, उसके बाद मॉरीशस, फिजी, यूके, सूरीनाम, त्रिनिदाद-टोबैगो, दक्षिण अफ्रीका, लंदन और अमेरिका आदि देशों में आयोजित हो चुका है। इन आयोजनों में विश्व के प्रसिद्ध हिन्दी लेखकों, चिंतकों एवं वक्ताओं का वैश्विक समागम होता है तथा पुस्तकों की प्रदर्शनियाँ लगाई जाती हैं। छात्रों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों की बढ़चढ़कर भागिदारी होती है। वे साहित्यिक व बौद्धिक ज्ञान से लाभान्वित तो होते ही हैं साथ-साथ विश्व के प्रसिद्ध हिन्दी लेखकों, पत्रकारों एव साहित्य प्रेमियों से भी आपसी संपर्क व संवाद स्थापित कर पाते हैं।

यूरोप के कई विद्वानों द्वारा बाइबिल का हिन्दी में अनुवाद किया गया है। 'बाइबिल अनुवाद-परम्परा में विलियम केरी प्रथम व्यक्ति हैं, जिन्होंने 1811 ई. में 'नया नियम' (न्यू टेस्टामेण्ट) और 1818 ई. में 'समग्र बाइबिल का अनुवाद किया। हेनरी मार्टिन (1817 ई.), बिशप अन्तुनीनुस वेज्जोनी (1880 ई.), जॉन थॉमस थॉम्पसन (1837 ई.), और जॉन चैम्परलेन (1820 ई.) ने हिन्दी में बाइबिल का अनुवाद किया।'[12] फादर कामिल बुल्के हिन्दी के एक महान साहित्यकार थे। उनका जन्म बेल्जियम में हुआ, किंतु उन्हें वास्तविक ख्याति भारत में प्राप्त हुई। उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम हिन्दी को बनाया और इसके माध्यम से भारतीय साहित्य को समृद्ध किया। उनकी प्रमुख कृति 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' है, जिसका प्रकाशन सन् 1950 ई0 में हुआ। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'अंग्रेज़ी–हिन्दी कोश' का निर्माण किया तथा बाइबिल का हिन्दी में अनुवाद किया, जिसे हिन्दी अनुवाद परंपरा की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है।

फादर कामिल बुल्के ने अपने प्रसिद्ध निबंध 'एक ईसाई की आस्था' तथा 'हिन्दी प्रेम और तुलसी भक्ति' में भाषा संबंधी विचार व्यक्त करते हुए हिन्दी के प्रति अपनी गहरी निष्ठा और सम्मान को स्पष्ट रूप से प्रकट किया है- "मैं हिन्दी तथा भारतीय संस्कृति के प्रति अपने आकर्षण का मूल स्रोत अपने विद्यार्थी जीवन का संस्कार मानता हूँ। मेरी जन्मभूमि बेल्जियम में दो भाषाएँ बोली जाती हैं- उत्तर में फ्लेमिश और दक्षिण में फ्रेंच। एक लम्बे अरसे से समस्त देश में प्रशासन, सेना, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा में फ्रेंच भाषा का बोलबाला था और उत्तर बेल्जियम का शिक्षित वर्ग

आपस में फ्रेंच बोलना और फ्रेंच सभ्यता में रँग जाना गौरव की बात मानता था। फ्लेमिश भाषा के समर्थकों का आन्दोलन प्रथम महायुद्ध के बाद जोर पकड़ने लगा और मैनें विद्यार्थी जीवन में अपनी मातृभाषा तथा फ्लेमिश संस्कृति की मर्यादा के लिए उत्तर बेल्जियम के सार्वजनिक तथा सामाजिक जीवन से फ्रेंच भाषा के बहिष्कार के अभिमान में वर्षों तक भाग लिया। मैं सन् 1935 ई. में भारत पहुँचा और मुझे यह देखकर आश्चर्य भी हुआ और दुःख भी कि बहुत से शिक्षित लोग अपनी सांस्कृतिक परम्परा से अनभिज्ञ हैं, अंग्रेजी बोलना और विदेशी सभ्यता में रँग जाना गौरव की बात मानते हैं। मैंने दृढ़ संकल्प किया कि जब उत्तर भारत में जीवन बिताना है, तो उत्तर भारत की जनता की भाषा पर अधिकार प्राप्त करना मेरा कर्त्तव्य है।"[13] जिस प्रकार बेल्जियम का शिक्षित वर्ग कभी दूसरे देशों की भाषा और संस्कृति को अपनाना गौरव की बात मानता था। तत्कालीन भारत के शिक्षित वर्ग की मनोदशा भी कुछ इसी प्रकार की थी। किंतु आज के दौर में इसमें व्यापक परिवर्तन आया है। भाषाई विषमता काफी हद तक दूर हुई है और हिन्दी अब भारतीयों के लिए शिक्षा, संवाद, व्यापार, आत्मसम्मान और राष्ट्रीय गौरव की भाषा बन चुकी है।

निष्कर्ष : प्राचीन भारतीय नैतिक एवं दार्शनिक आदर्श 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भाँति ही भूमण्डलीकरण एक आधुनिक आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी प्रक्रिया है, जो व्यापर की सुगमता तथा आर्थिक लाभ के आधार पर संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करती है। विश्व स्तर पर सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में मंदारिन और अंग्रेजी के बाद हिन्दी का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी सिनेमा और प्रवासी भारतीयों के कारण हिन्दी भाषा की पहुँच विश्व के अनेक देशों तक विस्तारित हुई है। प्रवासी भारतीय जहाँ भी गए, अपनी भाषा और संस्कृति को साथ ले गए तथा अपनी भारतीयता को जीवित रखा। उन्होंने हिन्दी भाषा को संवाद की भाषा बनाया और हिन्दी में रचनाएँ करके इसके साहित्यिक विस्तार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

संदर्भ :

1. डॉ. अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली - 110002, संस्करण-2009, पृ. 258.
2. चक्रधर, अशोक, संपादक, गगनांचल, वर्ष 38, अंक 4-5, जुलाई-अक्टूबर, 2015, पृ. 82-83.
3. वर्मा, डॉ. विमलेश कान्ति व सक्सेना, भावना, सूरीनाम का सृजनात्मक हिन्दी साहित्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ. 147.
4. वर्मा, डॉ. विमलेश कान्ति, फ़ीजी का सृजनात्मक हिन्दी साहित्य, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, 2012, पृ. 98.
5. वर्मा, डॉ. विमलेश कान्ति, गगनांचल, विशेषांक-विदेश में हिन्दी, अतिथि संपादक: भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली, पृ. 41.
6. वही, पृ. 57.
7. वही, पृ. 101.
8. वही, पृ. 131.
9. वही, पृ. 132.
10. वही, पृ. 145.
11. वही, पृ. 148.
12. प्रसाद, दिनेश्वर, भारतीय साहित्य के निर्माता फादर कामिल बुल्के, साहित्य अकादेमी, प्रथम संस्करणः 2022 ई., रवीन्द्र भवन, 35, फीरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली-110001, पृ. 75.
13. वही, पृ. 90.